मलाकी

1 इस्राएल के बारे में परमेश्वर का वह
गंभीर संदेश जो मलाकी द्वारा पहुँचाया
गया । 2 याहवे का कहना है कि मैंने तुम से
स्नेह किया है और फिर भी तुम्हारा सवाल
है, किस बात में । याहवे का कहना यह
है कि क्या ऐसाव, याकूब का भाई नहीं
था ? 3 फिर भी मैंने याकूब को चाहा और
ऐसाव को न चाहा । मैंने एसाव के पहाड़ों
को उजाड़ दिया । जो कुछ उस का था वह
सब गीदड़ों का हिस्सा बन गया । 4 एदोम
के लोगों का कहना है कि उनका देश उजड़
गया है लेकिन उसे वह फिर से बसा लेंगे
। सेनाओं के याहवे कहते हैं कि यदि वे
बनाने में सफल भी हो जाएँ तौभी मैं उसे
ढा दूँगा । वे लोग दुष्ट कहलाएँगे और ऐसे
लोग भी जिन से याहवे सदैव नाराज़ रहते
हैं । 5 अपनी आँखों से तुम यह देखोगे और
कहोगे कि याहवे की महिमा इस्राएल की
सीमा पार तक बढ़ती जाए 6 बेटा अपने पिता
का और नौकर अपने मालिक की इज्ज़त
करता है । यदि मैं पिता हूँ तो मुझे आदर क्यों
नहीं दिया जा रहा है ? यदि मैं मालिक हूँ तो
मुझे उचित सम्मान क्यों नहीं मिल रहा है ?
सेनाओं के याहवे यही प्रश्न पुरोहित समाज
से करते हैं । लेकिन तुम्हारा सवाल यह है
कि किस बात में तुमने मेरी बेइज्ज़ती की
है । मेरी वेदी पर तुम अशुद्ध खाना चढ़ाते
हो । 7 फिर भी तुम प्रश्न करते हो कि किस
बात में तुम मुझे अशुद्ध ठहरा रहे हो । इसके
अलावा तुम्हारी शिकायत यह है कि याहवे
की मेज़ बेकार है । 8 जब तुम अन्धे जानवर
को कुर्बान करने के लिए ला रहे हो, तो क्या
यह सही है ? लंगड़े और बीमार जानवर को
कुर्बानी के लिए लाना क्या अनुचित नहीं है ?
यदि तुम अपने गवर्नर[a] के पास ऐसी भेंट ले
जाओ, तो क्या वह खुश होकर तुम पर अपनी
कृपा उण्डेलेंगे ? यही सेनाओं के याहवे का
संदेश है । 9 मैं तुम से यह कर रहा हूँ कि तुम
परमेश्वर से प्रार्थना करो कि वह हम पर दया
करें । 10 अच्छा यह था कि किसी ने मन्दिर
के दरवाज़े को बन्द कर दिया होता, ताकि
बेकार में तुम मेरी वेदी पर आग न जला पाते
। सेनाओं के याहवे का कहना यह है कि
मैं तुम से बिल्कुल खुश नहीं हूँ और तुम्हारी
भेंट भी स्वीकार नहीं करूँगा । 11 पूर्व से
पश्चिम तक मेरा नाम गैर यहूदियों में महान
है । सभी जगह मेरे नाम से धूप और शुद्ध भेंट
चढ़ाई जाती है । यही सेनाओं के याहवे की
वाणी है । 12 लेकिन तुम लोग यह कह कर
उनको अपवित्र ठहराते हो कि याहवे की मेज़
अशुद्ध है । यह भी कि खाने की जो वस्तु उस
पर से मिलती है, बेकार है । 13 फिर तुम्हारा
कहना यह भी है कि यह कैसा बड़ा उपद्रव
है। सेनाओं का वचन सही है । तुम खाने की
चीज़ों के बारे में बुड़बुड़ाए हो । तुम अन्याय
करके हासिल किए हुए लंगड़े और बीमार
पशु की भेंट मेरे लिए लाते हो । क्या मैं उसे
स्वीकार करूँ। 14 जिस छल करने वाले के
झुण्ड में नर पशु हो लेकिन वह मन्नत मान कर
परमेश्वर को मना किया हुआ पशु चढ़ाए,
वह सज़ा पाए । मैं महाराजा हूँ । गैरयहूदियों
में मेरा आदर है ।

---

[a] **1.8** हाकिम या अधिकारी

2 हे पुरोहितो[a] सुनो मेरी आज्ञा । 2 यदि तुम
नहीं सुनोगे और पूरे मन से मेरा आदर
नहीं करोगे, तो तुम्हें इसके बुरे परिणाम सहने
होंगे । जो वस्तुएँ तुम्हें मेरी ओर से आशीष के
रूप में मिली हैं, वे नुकसान का कारण बन
जाएँगी । तुम में से जो लोग मेरी कही बात
की अनसुनी करते हैं, उनके साथ ऐसा हो भी
रहा है । 3 तुम्हारे कारण मैं बीज को डाँटूंगा ।
तुम्हारे त्यौहारों के यज्ञ पशुओं का मल तुम्हारे
मुँह पर फैलाऊँगा । उसके साथ ही तुम भी
उठा कर फेंक दिए जाओगे। 4 तब तुम जान
जाओगे कि यह आदेश मैंने तुम्हें इसलिए
दिया है, ताकि मेरी जो वाचा लेवी के साथ
बन्धी है, वह बनी रहे । 5 वह वाचा, जीवन
और शान्ति की थी । ऐसा मैंने इसलिए किया
था ताकि वह मेरी इज़्ज़त करे और कहना
माने । ऐसा उसने किया भी । 6 मेरे नियमों
और आज्ञाओं को उसने मुँह ज़ुबानी रट लिया
था । वह मुँह से कोई गलत बात नहीं बोलता
था । उस का चाल चलन सही था । वह बहुत
से दूसरे लोगों को सही रास्ते पर ले आया
था । 7 पुरोहित की ज़िम्मेदारी यह है कि वह
ज्ञान की रक्षा करे । लोग उससे नियम और
आज्ञाएँ सीखने के लिए आएँ । पुरोहित याहवे
का दूत है । 8 लेकिन तुम लोग सही रास्ते से
भटक गए हो । तुम बहुतों के लिए ठोकर
का कारण बन गए हो । लेवी की वाचा को
तुमने बना कर नहीं रखा । 9 इसीलिए मैंने
तुम्हें सभी लोगों के सामने तुच्छ और नीचा
कर दिया है । तुम मेरे रास्ते पर नहीं चलते
रहे हो । तुम तरफ़दारी करते हो । 10 क्या
हम सब के एक पिता नहीं ? क्या एक ही
परमेश्वर ने हमें नहीं बनाया है ? एक दूसरे
को धोखा देकर हम अपने बुज़ुर्गों की वाचा
को तोड़ क्यों देते हैं ? 11 यहूदा ने विश्वासघात
किया है । उसने इस्राएल और यरूशलेम में
घिनौना काम किया है । यह घिनौना काम है
पराए देवता की बेटी से विवाह करके याहवे
के प्रिय पवित्रस्थान को अपवित्र करना ।
12 जो पुरुष ऐसा करे, उसके घर में से याकूब
के परमेश्वर, उसके घर के रखवाले और
याहवे को भेंट चढ़ाने वाले को यहूदा से काट
डालेंगे । 13 तुमने याहवे की वेदी को रोने
वालों और आँहें भरने वालों के आँसुओं से
गीला कर दिया है । परमेश्वर न तुम्हारी भेंट
को अपनाते हैं, न ही खुश होते हैं । अब
तुम्हारा सवाल है “ऐसा क्यों ?” 14 याहवे
तुम्हारे और तुम्हारी जवानी की पत्नी के बीच
गवाह हैं, जिस को तुमने धोखा दिया है ।
15 क्या परमेश्वर ने दोनों ही को एक नहीं
बनाया है ? और हमारे जीवन को बना कर
नहीं रखते हैं ? उन्हें ‘एक’ करने का मकसद
यह है कि परमेश्वर से प्रेम करने वाली
सन्तान उत्पन्न हो । इसलिए हर एक अपने
को संभाले और पत्नी के साथ विश्वासघात
न करे । 16 इस्राएल के प्रभु परमेश्वर कहते
हैं कि तलाक से उन्हें नफ़रत है । यह तो
अपने कपड़ों से अपनी हिंसा को ढाँकना
है, सेनाओं के परमेश्वर की यही वाणी है
। इसलिए ध्यान देना, कि तुम विश्वासघात न
करो । 17 अपने शब्दों से तुमने परमेश्वर को
थका दिया है । तुम उल्टा सवाल भी करते हो
कि हम ने किस बात में परमेश्वर को थका
डाला है । तुम कहते हो कि परमेश्वर की
दृष्टि में हर एक बुरा करने वाला अच्छा है
और वह ऐसे लोगों से खुश रहते हैं । यह भी
कि इन्साफ़ करने वाले परमेश्वर हैं कहाँ ?

3 देखो, मैं अपना संदेश देने वाला भेजने
वाला हूँ । वह पहले से आकर मेरा

[a] **2.1** याजको

रास्ता सुधारेगा । जिस प्रभु की तलाश में
तुम हो, वह अचानक ही अपने मन्दिर में आ
जाएगा । जिस वाचा के दूत को तुम चाहते
हो, वह आने वाला है। 2 लेकिन उसके आने
के दिन को सहेगा कौन ? उसके आने पर
कौन खड़ा रह पाएगा ? वह सुनार की आग
और धोबी के साबुन की तरह है । 3 वह चाँदी
का ताने वाला और शुद्ध करने वाला बन
जाएगा । वह लेवियों को शुद्ध करेगा । वह
सोने और रूपे की तरह उनको साफ़ करेगा
। तब वे याहवे की भेंट ईमानदारी से चढ़ाएँगे
। 4 तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट याहवे
को इतनी अच्छी लगेगी, जैसे पुराने दिनों
में लगती थी । 5 तब इन्साफ़ करने के लिए
मैं तुम्हारे पास आऊँगा । मैं इन सभी लोगों
के खिलाफ़ गवाही दूँगा - टोना करने वाले,
व्यभिचारी, झूठी गवाही देने वाले, मजदूरों
को उचित मज़दूरी न देने वाले, विधवाओं
और अनाथों पर अन्धेर करने वाले, परदेशी
के साथ अन्याय करने वाले और मुझ से न
डरने वाले 6 मैं याहवे कभी न बदलने वाला
परमेश्वर हूँ । यही कारण है याकूब, "तुम
बर्बाद नहीं हुए ।" 7 अपने पूर्वजों के दिनों
से तुम लोग मेरे रास्तों से दूर चलते रहे हो ।
तुम मन बदलो, तब मैं तुम्हारी ओर अपना
ध्यान करूँगा । लेकिन तुम्हारा सवाल यह
है, कि किस बात में हम अपना मन बदलें
8 क्या इन्सान परमेश्वर को धोखा दे सकता
है ? तुम मुझे धोखा देते हो और फिर उलट
कर पूछते हो हम ने किस बात में आपको
लूटा है ? दसवाँ हिस्सा देने और उठाने की
भेंटों में । 9 तुम पर भयंकर सज़ा आ पहुँची है,
इसका कारण है कि तुम सभी मुझे लूटते हो
। 10 सारा दसवाँ भाग भण्डार गृह में लेकर
आओ, ताकि मेरे भवन में खाने की चीज़ें रहें
। ऐसा करके तुम मुझे जाँचो, कि मैं आकाश
की खिड़कियों को खोलकर तुम्हारे ऊपर
बे-गिनती आशीष की बरसात करता हूँ या
नहीं 11 तुम्हारे लिए मैं बर्बाद करने वाले को
ऐसा डाँटूंगा कि तुम्हारी ज़मीन के उत्पादन
को वह नाश न कर पाएगा । तुम्हारी अंगूर
की लता के फल कच्चे न गिरेंगे । 12 तब
सारे देश तुम को आशीषित कहेंगे, क्योंकि
तुम्हारा देश दिल को खुश कर देने वाला
होगा, सेनाओं के याहवे यही कहते हैं ।"
13 याहवे का कहना यह है कि तुमने मेरे
खिलाफ़ ढिठाई की बात कही है । लेकिन
फिर भी पूछते हो कि हम ने आपके खिलाफ़
क्या किया है ? 14 तुम कहते हो, "परमेश्वर
की सेवा करने में कोई मतलब नहीं । हम तो
उनके बताए गए रास्तों पर चलते रहे हैं । हम
उन से डरते हुए शोक के वस्त्र भी पहन चुके
हैं, लेकिन क्या कोई फ़ायदा हुआ ? 15 अब
से हम घमण्डी लोगों को आशीषित कहते
हैं, क्योंकि दुराचारी तो सफ़लता हासिल कर
रहे हैं ।" 16 इसके बाद याहवे का डर मानने
वालों ने आपस में बातें की । उनकी बातों को
याहवे ध्यान से सुन रहे थे । जो लोग याहवे
का आदर करते और डरते थे, उनकी याद
के लिए परमेश्वर के सामने ही एक किताब
लिखी जा रही थी। 17 सेनाओं के याहवे का
कहना यह है कि जो दिन मैंने नियुक्त कर
दिया है, उस दिन वे लोग मेरे अपने होंगे ।
मेरी कोमलता का बर्ताव उनके साथ ऐसा
होगा जैसा कोई अपने सेवा करने वाले से
करता हो । 18 तब तुम लोग धर्मी और दुष्ट
के बीच का अन्तर या कौन उनकी सेवा
आराधना करता है और कौन नहीं करता है,
समझ सकोगे ।

4 देखो, वह धधकती भट्टी का सा समय
आने वाला है । उस दिन सब घमण्डी

और बुरा करने वाले अनाज की खूँटी बन
जाएँगे । तब वे ऐसे भस्म हो जाएँगे कि उनका
नामो - निशान तक न मिलेगा । 2 लेकिन तुम
जो मुझ से डरते हो । धार्मिकता का सूरज
निकलेगा । उसकी किरणों से तुम स्वस्थ हो
जाओगे । तुम घरेलू बछड़ों की तरह खुशी
मनाओगे। 3 तुम दुष्टों को पैरों से रौंद डालोगे
। कहने का अर्थ यह है कि मेरे निश्चित किए
गए दिन में वे तुम्हारे पाँव के नीचे की राख
ठहरेंगे । 4 मेरे दास मूसा का नियमशास्त्र, जो
होरेब पहाड़ पर जिस में नियम और आज्ञाएँ
है, उन्हें दिया गया था, याद रखना ज़रूरी
है । 5 याहवे के उस बड़े और भयानक दिन
के आने से पहले तुम्हारे पास मैं एलिय्याह
भविष्यद्वक्ता को भेजूँगा । 6 माता-पिता के
मन को वह उनके बच्चों की ओर करेगा ।
। बच्चों के मन को वह उनके माता-पिता की
ओर करेगा, ताकि कही ऐसा न हो कि मैं इस
दुनिया का बर्बाद करूँ ।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com